ऐसा न कहता कि भूमि का निष्कण्टक राज्य अथवा स्वर्गीय देवताओं के समान आधिपत्य की प्राप्ति हो जाने पर भी उसके शोक का निवारण नहीं हो सकेगा। अन्त में उसने कृष्णभावनामृत का ही आश्रय ग्रहण किया, जो शान्ति एवं सामरस्य का यथार्थ पथ है। प्राकृतिक प्रलय से आर्थिक विकास अथवा विश्वआधिपत्य का विनाश किसी भी क्षण हो सकता है। चन्द्र आदि उच्च लोकों की प्राप्ति भी एक प्रहार में समाप्त हो सकती है। स्वयं भगवद्गीता में इसकी पुष्टि है: **क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोकं विशन्ति।** पुण्य कर्मफल की समाप्ति होने पर प्राकृत सुख की चोटि से जीव का जीवन के परम अधम स्तर पर पतन हो जाता है।' संसार में अनेक राजनीतिज्ञों का इसी प्रकार अधःपतन हुआ है। इस प्रकार का अधःपतन अधिकाधिक शोक का ही कारण सिद्ध होता है।

अतएव यदि हम सदा के लिए शोक का निवारण करना चाहें तो अर्जुन का अनुगमन करते हुए भगवान् श्रीकृष्ण की शरण ग्रहण करनी ही होगी। अर्जुन ने श्रीकृष्ण से अपनी समस्या का निश्चित समाधान करने का आग्रह किया। इसी पद्धति के कृष्णभावनामृत साध्य है।

सञ्जय उवाच।
एवमुक्त्वा हृषीकेशं गुडाकेशः परंतप।
न योत्स्य इति गोविन्दमुक्त्वा तूष्णीं बभूव ह।।९।।

सञ्जयः उवाच=सञ्जय ने कहा; **एवम्**=इस प्रकार; **उक्त्वा**=कहकर; **हृषी-केशम्**=हृषीकेश भगवान् श्रीकृष्ण को; **गुडाकेशः**=अज्ञानविजयी अर्जुन; **परंतप** = शत्रुओं का दमन करने वाला; **न योत्स्ये**=मैं युद्ध नहीं करूँगा; **इति**=यह; **गोविन्दम्**=आनन्दकन्द श्रीकृष्ण से; **उक्त्वा**=कहकर; **तूष्णीम्**=चुप; **बभूव**=हो गया; **ह**=निश्चित रूप से।

अनुवाद

संजय ने कहा, शत्रुविजयी अर्जुन भगवान् श्रीकृष्ण से यह कहकर तथा फिर 'हे गोविन्द! मैं युद्ध नहीं करूँगा', ऐसा कहकर चुप हो गया।।९।।

तात्पर्य

धृतराष्ट्र के हृदय में यह जान कर निश्चित रूप से हर्षातिरेक हुआ होगा कि अर्जुन युद्ध करने की अपेक्षा भिक्षावृत्ति के लिए रणांगण से विमुख हो गया। परन्तु संजय ने यह कहकर उसे फिर हताश कर दिया कि अर्जुन **परंतप** है, अर्थात् शत्रुमर्दन में पूर्ण समर्थ है। स्वजनस्नेह से उत्पन्न मिथ्या शोक से कुछ समय के लिए अभिभूत हो जाने पर भी अर्जुन ने शिष्य-रूप से परम गुरु भगवान् श्रीकृष्ण की शरण का आश्रय ग्रहण कर लिया। अतएव वह अतिशीघ्र स्वजनस्नेह जनित मिथ्या शोक से मुक्त हो जायगा और स्वरूप-साक्षात्कार अर्थात् कृष्णभावनामृत के समग्र ज्ञान से दीप्त होकर निःसन्देह युद्ध करेगा। इस प्रकार धृतराष्ट्र का हर्ष एक बार फिर निराशा